भाषा, साहित्य एवं भारतीय संस्कृति : वैश्विक परिदृश्य

हिंदी साहित्य के विविध आयाम : वैश्विक परिदृश्य

संपादक मंडल

राजेश अग्रवाल

डॉ.डी.विद्याधर

डॉ.सुषमा देवी

डॉ.डी.जयप्रदा

डॉ.सुरेश कुमार मिश्रा

मिलिंद प्रकाशन

हैदराबाद

यह पुस्तक पूर्णतः यूनिकोड में निर्मित हुई है।

हिंदी के विकास के लिए यह संस्था कथनी से अधिक करनी में विश्वास को बढ़ावा दे रही है।

Scanned with CamScanner

73. अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों का साहित्यिक प्रदेय	गहनीनाथ	430
74. मुद्राराक्षस के नाटक : सांस्कृतिक परिवर्तन का परिदृश्य	रूपांजलि कामिल्या	436
75. भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी उपन्यासों में विस्थापन की समस्या	भावना	441
76. हिन्दी कथा-साहित्य में भगवानदास मोरवाल का योगदान	सुरेश यादव	446
77. कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी संघर्ष	जयंती	452
78. हिंदी उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता	रेखा देवी	458
79. दलित चेतना का अनुशीलन ('खरोंच' कहानी संग्रह के विशेष सन्दर्भ में)	इबरार खान	463
80. हिन्दी उपन्यासों में आधुनिक नारी का आत्मसंघर्ष	चेन्नकेशव रेड्डी	472
81. हिन्दी उपन्यास का इतिहास और गोपाल राय	पवार जयसिंह	477
82. हिन्दी साहित्य जगत में मुस्लिम लेखकों का योगदान	टी. माधवी	485
83. हिंदी के विकास में मॉरीशसीय पत्र-पत्रिकाओं का योगदान	सविता देवी	489
84. डॉ. जयप्रकाश कर्दम की कहानी 'हाउसिंग सोसाइटी' में चित्रित दलित संघर्ष की चेतना	ए. साम्बशिव राव	497
85. मृदुला गर्ग के उपन्यासों में भाषिक विविधता (चयनित उपन्यासों के संदर्भ में)	के. कांचना	506
86. 21वीं सदी का एकांकी नाटक	हेमलता	510
87. हिंदी उपन्यास : विविध संदर्भ ("द स्कार" दलित आत्मकथात्मक उपन्यास के परिपेक्ष्य में)	आशु मंडोरा	512
88. हिंदी लोक साहित्य	संदीप कुमार	515
89. जीवन साहित्य और 'नेने बलान्नी' जीवनी	मुत्यमवार प्रवलिका	522

Scanned with CamScanner

डॉ. जयप्रकाश कर्दम की कहानी 'हाउसिंग सोसाइटी' में चित्रित दलित संघर्ष

- ए. साम्बशिव राव

डॉ. जयप्रकाश कर्दम द्वारा लिखी गयी 'हाउसिंग सोसाईटी' कहानीसामाजिक, शैक्षणिक, स्वाभिमान, तकनीकियों एवंवैज्ञानिक और कानूनी कारवाई की चेतना से ओत-प्रोत है।आधुनिक तकनीकियों के माध्यम से जाति व्यवस्था को सामने करनेवाले दलित डिप्टी सेक्रेटरी(विजय महतो)का संघर्षपूर्ण जीवन का चित्रिण मुखरित है ।

इस कहानी के तीन प्रमुख पात्र हैं, जैसे 1. विजय महतो, जो भारतीय रेल मंत्रालय के डिप्टी सेक्रेटरी, जिसकीपचास साल की उम्र तक पहुँचने के बावजूद भी निजी मकान से अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करनेवाला,हाउसिंग सोसाइटी की मेंबरशिप के माध्यम से फ्लैट प्राप्त करने के इच्छुक एवं संघर्षरतअम्बेडकरवादी,दलित वेतन-भोगी और समय के बहुत पाबंद ।2. विजय महतो की पत्नी – जोअपने पती के रिटायरमेंट से पहले अपने एक आवास योग्य निजी मकान बनवाकर जातीय व्यवस्था की उत्पीड़न सेबचाकररहना चाहती हैं, इसलिए अपने पती की हाउसिंग सोसाइटी की सदस्यता केलिए उतावली थी। 3. एस.के. शर्मा – जो केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के हाउसिंग सोसाइटी के सेक्रेटरी और जातिवाद के बहुत बड़ा समर्थक।

इस कहानी में चित्रित दलित संघर्ष एक तरफ विजय महतो और उनकी पत्नी के भीच चलता है तो दूसरी ओर विजय महतो एवं एस. के शर्मा के भीच मेंचलता है।

इस कहानी में डॉ.जयप्रकाश कर्दम ने नगर के दलित वेतन-भोगी का जातीय संघर्ष से उत्पन्न जीवन की पीड़ा, व्यथा, निजी मकान नहीं रहने से जो अभावग्रस्त जीवनका महसूस तथा इसके कारण हुआ आत्मशोधएवंआत्मसंघर्ष का वर्णन किया है। सार्वजनिक हाउसिंग सोसाइटी में दलित वेतनभोगी को जाति के कारण सदस्यता नहीं मिलने का यथार्थ चित्रण यहाँ समकालीन हिन्दू वर्चस्व समाज का दर्पण है । यहसवर्णों की

Scanned with CamScanner

मानसिकता का यथार्थ चित्रण है। इस में सामजिक स्तर के अंतर (सोशल स्टेटस), ऊँच-नीच तथा जातीय व्यवहार का अनुभव मिलता है।

आधुनिककाल, और ऊपर से लोकतंत्र व्यवस्थाओं की संस्था, वह भी स्वतंत्रता के सत्तर साल के बाद भी प्राचीन वेद्भूमि भारत में दलित लोग रोटी, मकान, कपड़ा आदिप्रधमिक मानवाधिकारों से वंचित हैं । जम्बूद्वीप में जाति व्यवस्था से सामाजिक असमानताएँ फ़ैली हुई हैं। धार्मिकता के नाम पर दमननीति बढीं है । दलितों की व्यथा, पीड़ा, उत्पीड़नसे बचने का संघर्ष और बढ़ने लगा। इन तमाम असमानताओं से ऊपर उठने केलिए संविधान से प्राप्त आरक्षणों की सहायता से शिक्षित दलित, सरकारी कर्मचारी बनाने लगें । क्योंकि भारतीय समाज में दलितों के पास न जमीन है, न जल है और न जंगल है । स्वतंत्रभारत में संविधान लागू होने से पूर्व भारतीय समाज में दलितों को शैक्षणिक उन्नती, सामाजिक स्तर, आर्थिक समृद्धि, राजनीतिक अधिकारऔर सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्कारों सेवंचित रखेथे । आरक्षण एवं छात्र वृत्ति से शैक्षणिक उन्नती होने लगी । अभी-अभी राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने लगें । सदियों से दलितों की सुसम्पन्न अपनी अलग संस्कृति और धार्मिक विश्वास हैं, अब उस में निदान होने लगी। लेकिन जाति व्यवस्था से सामाजिक स्तर में कोई परिवर्तन नहीं है ।वेतन-भोगी बनने के कारण दलितों में आर्थिक समृद्धि बढ़ने लगी । जातिगत भेदभावों के कारण यह आर्थिक समृद्धि भी भारतीय सामाजिक जीवन में समानता नहीं ला पाईं । समता, समानताऔर बंधुता बहुत दूर की बात बन गईं । इस कहानी की घटनाओं का क्रम देखेंगे तो उपर्युक्त कथन असंगत नहीं होगा।

भारतीय रेल मंत्रालय में डिप्टी सेक्रेटरी विजय महतो दिल्ली के आर. के पुरम सेक्टर तीन में रहता है ।अपने रिटायरमेंट से पहले वे अपने एक निजी मकान या फ्लैट यहाँ बनवाना चाहता है । इसलिए कि वह अपनी अवकाश प्राप्ती के बाद भी अपने गाँव जाना नहीं चाहता है। क्यों कि ये गाँव अभी भी परंपरागत जातिव्यवस्था से ग्रसित है । जाति व्यवस्था के कुसंस्कारों सेविजय महतो बहुत परिचित है । इसलिए वह खुद वहाँ नहीं जाना चाहता है, साथही बच्चों को भी बेजना नहीं चाहता । अपने गाँव की जातीय व्यवस्था की पुष्ठी करते हुए महतो इस प्रकार कहता है कि'बच्चे गाँव में रह पायेंगे या नहीं, यह तो बाद की बात है । मैं तो खुद नहीं चाहूँगा कि मेरे बच्चों को गाँव के उस दूषित माहौल में जाकर रहना पड़े, जहा जात-पात का भेदभाव एवं

Scanned with CamScanner

छुआछूत हैं। अपनी जिंदगी का एक हिस्सा हमने गाँव में बिताया है । मैं नहीं चाहूँगा कि जो घृणा, अपमान एवं उपेक्षा गाँव में रहकर हमको सहनी पडे ।'1बले ही वेतनभोगी क्यों न हो पैसों की कमी भी बहुत सताती थी । क्योंकि दलित समाज के घर खाली कुंए होते हैं । जब यह कुआं भरकर समतल बनता है तब जातिगत भेदभाव सामनेआकर कटकने लगता है । बहुत साल से महतो के हृदयमें अपना मकान न होने की उसकी पीड़ा झलक रही थी । इसलिए सरकारी कर्मचारयों की हाउसिंग सोसाइटी में सदस्यता पाने केलिए बहुत प्रयासकर रहाहैं ।

सदस्यता पाने केलिए महतो सकारात्मक विचारधरा से आगे बढ़ते है । इसलिए उनके कार्यालय के एक साथी अरुण कुमार सिन्हा से वे कहते हैं कि 'मैं भी प्रयास कर रहा हूँ । अभी संयोग नहीं बना है । जब संयोग बनेगा, देर-सवेरा मेरा अपना मकान भी बन जाएगा ।'2 उनकी सकारात्मक सोच ने उसे बिना निराश पचास साल की उम्र तक इंतज़ार करवाती है ।इसी सोच के कारण सवर्णों की सांप्रदायिक मानसिकता की पहचान करनेमें उसे असमर्थ कर दियी ।

महतो ने जिस ग्रामीण परंपरा से दूर रहना चाहता है वही मानसिकता का परिचय नगर जीवन में भी दिखाई देती है । इसलिएजातीय व्यवस्था, ऊँच-नीच एवं सामाजिक स्तर (स्टेटस) को अधिक महत्त्व देनेवाला,वहभीजब भारत की राजधानीदिल्ली जैसे अंतर्जातीय उत्तराधुनिक एवं अल्ट्रामॉडर्ननगर में रहते हुए भी वही ग्रामीण जातीयसांप्रदायिकताको फल पुष्पितकरनेवालाएस. के. शर्मा ने 'महतो' और'मेहता' इनदो पदनामों कीविशेषता या जाति से संबंध अंतर जानने केलिए'पाञ्च' मिनट के बाद फोन करने केलिए कहता है, तो हम भारत में जातीवाद की विषमताओं केजड़ कितने मजबूत हैं, यहसमाझपाना कोई कठिन नहींहै । इसलिए इस कहानी की प्रमुख घटनाओं में से यह मूल बिंदु यही से शुर होता है।इस फोन संभाषण से एस. के. शर्मा की कुत्सित मानसिकता का परिचय मिलता है । इसके सन्दर्भ में इस संभाषण का क्रम देखना उचित होगा ।

शर्मा:'यदि आप केन्द्रीय सरकार के कर्मचारी हैं तो आपको मेंबरशिप मिल सकता है ।'

महतो: 'जी हां, मैं केन्द्रीय सरकार का कर्मचारी हूँ।

Scanned with CamScanner

शर्मा:'आप कहाँ पर, मेरा मतलब है किस दफ्तर में काम करते हैं ?'

महतो:'मैं रेल मंत्रालय में काम करता हूँ ।'

शर्मा:'कहाँकिस पद पर काम करते हैं ?'

महतो: 'मैं डिप्टी सेक्रेटरी के पद पर काम करता हूँ ।'

शर्मा:'क्या नाम है आपका ?'

महतो: 'मेरा नाम विजय महतो है ।

शर्मा:'ठीक है मेहता जी, आपको मेंबरशिप मिल सकती है ।'

महतो:'मेहता नहीं जी, मैं महतो हूँ।

शर्मा:'महतो?'

महतो: 'जी हां, महतो । क्यायहबतायेंगे कि मुझे सदस्यता लेने केलिए क्या करना होगा।'

शर्मा:'महतो जी मैं आपसे पाञ्च मिनट के बाद बात करता हूँ ।'3

यदी सांकेतिक दृष्टि से देखेंगे तो पहला प्रश्न का उत्तर पाते ही महतो को मेंबरशिप तय होनी चाहिए, लेकिन यहाँ मामले कुछ और अलग तरीका के हैं ।सदस्यता देने केलिए इतने सारे प्रश्न की जरूरत नहीं है, जब की हाउसिंग सोसाइटी केन्द्रीय सरकार केसार्वजनिक कर्मचारियों कीहै। लेकिन जातिगत भेदभाव रखनेवाला शर्मा अपनी कुत्सित मानसिकता का प्रकटकरताहै। जब महतो को'दलित' के रूप में पाता है तो शर्मा जी अपना कुसंस्कार को और तेज / उझागर करते हुए कहता है 'महतो जी, आपको ठहरना पडेगा। आपपाञ्च मिनट के बाद बात करें । या आप रहने दें, मैं खुद ही फोन करके बता दूँगा ।' इस का मतलब – हेमहतो! तुम दलित हो, हम दलितों केलिए सदस्यता नहीं दे रहे हैं, इन सारी कोमल एवं नाजुक बातें सीधा कही नहीं जाएगीं । जिस मनुष्यसेबात करना ही नहीं चाहते, क्या उस केलिएप्रत्येक रूप से वापस फोन करना संभव है ?क्या शर्मा यह कर पाएगा? नहीं, बिलकुल नहीं । गैर दलितों की यह कुटिल नीति कासंकुचितदृष्टी संविधान का अपमान करने के बराबर है।

इस कहानी में विजय महतो अपने रिटायरमेंट के बाद भी वे बेहद नगर में ही अपनेमकान बनाकर निजी मकान में रहना चाहता है।बाबासाहेब अम्बेडकर ने खुद ग्रामीण जीवन और वहाँ के रहनसहन, आचार व्यवहार, जातिगत भेदभाव, सवर्णों की मानसिकता, छुआछूतआदिके बारे में कहते

Scanned with CamScanner

थे कि ये सब पालन करने (व्यक्तया प्रकट करने)केलिएगाँव केन्द्रीय स्थान हैं । इसलिए वे दलितों को नगरीकरण की ओर संकेत करते हैं (गाँव छोड़ो नगर बसों) । इस के साथ यह भी कहते हैं किभारत के लोग जहाँ-जहाँ जाते हैं वहाँ उनके साथ अपनी जाति कोभी लेकर जाते हैं। इस कहानी मेंइसकी पुष्ठी देते हुए एस. के. शर्माइस प्रकार कहते हैं कि 'यह तो ठीक है महतो जी, पर... । आप तो अच्छी तरह समझते हैं कि हमारा समाज कुछ अलग तरह का है, और हमारी सामाजिकता और सामजिक स्टेटस भी कुछ अलग तरह से निर्धारित होता है। मेरा मतलब है कि सब सदस्य उच्च जातियों के हैं, जब की आप... । हमें तो इन बातों से कुछ लेना-देना नहीं है, लेकिन फ्लैट बेचने है तो यह सब ऊँच-नीच देखनी पड़ती हैं।यदी आपको सोसाइटी का मेंबर बना लें तो सोसाइटी में इसका तीव्र विरोध होगा और हमारे बाकी फ्लैट भी नहीं बिक पाएंगे।'4 इस कथन को देखने से ऐसा लगताहै कि यह भारत के किसी गाँव की जातीय व्यवस्था से कोई कम नहीं है। महतो ने सरकारी कर्मचारियों की आवासीय सोसाइटी में भी जातिगत आधार पर भेदभाव हो सकता हैं, इसकी कल्पना भी नहीं कर पाये थे। यदी सरकारी कर्मचारियों का चरित्र इस प्रकार सामना आता हैं, तो सामान्य लोगों से क्या उम्मीद की जा सकती है, इस प्रकार के विचार और विरोध भाव मन में आते ही सोसाइटी के इतिहासपर, विशेष रूप से शर्मा के चरित्र एवं व्यक्तित्व पर दलित समाज (विजय महतो)मेंक्रोध पैदा होना स्वाभाविक है। फिर भी महतो शर्मा पर क्रोध प्रकट न करकेकेवल अपनी प्रतिक्रिया ही दिखाकर मर्यादाओं का पालन करते हुएइस प्रकार कहते है कि – 'लेकिन यह ठीक नहीं हैं शर्मा जी। सरकारी कर्मचारियों की हाउसिंग सोसाइटी में यह सब नहीं होना चाहिए।'5 यहाँमहतो ने अपनीप्रतिक्रियाइसलिए प्रकट कर पाए थे कि वह बाबासाहेबअम्बेडकर के विचारों से ओत-प्रोत है । वहशिक्षित है। भारत के रेल मंत्रालय में दलित डिप्टी सेक्रेटरी है ।यहसामाजिक एवं शैक्षणिक चेतना का संकेतहैं ।

एक चेतनाशील दलित वेतनभोगी को जातीय दुरावस्था को झेलना पड़ा । फिर भी साम्प्रदायिकता से ग्रसित, परम्परा के कुत्सित स्वभाववाला, कुसंस्कारी शर्मा,अपने कुंटित विचारकोइस प्रकार प्रकट करता है–'इसे आप कुछ भी कह दीजिए महतो जी लेकिन साँरी (sorry), हम आपको अपनी सोसाइटी में फ्लैट नहीं दे पाएंगे ।'6 इतना कहकर शर्मा

Scanned with CamScanner

अपनी कुर्सी से उठा और सोसाइटी के अन्य सदस्यों/लोगों से बातें करने लगा । यह इस बात का संकेत है कि शर्मा इससे ज्यादा याइसके बाद विजय महतो से और किस प्रकार की बात भी नहीं करना चाहता है ।ये सब बहुत उत्पीडन और दमन नीति का संकेत हैं । कहना उचितहोगा कि जातीय व्यवस्था और कुंटित मानसिकता की और व्यापकताका चिलण उत्तराधुनिक उत्पीडन का नया रूप है।

विजय महतो ने इस बात को बहुत अच्छी तरह और गहराईतक महसूस किये थे। रविवार के दिन समाचारपल में हाउसिंग सोसाइटी में सदस्यता हेतु निकलीविज्ञापनको देखकर, सोसाइटी के सचिव (सेक्रेटरी) शर्मा से फोन पर संपर्क करते हैं । कई बार अपने नाम पर सदस्यता मांगते हुए मेम्बरशिप मिलने की कन्फर्मेशन के बारे मेंजानने केलिए लगातार प्रयल करता है ।लेकिनफोनपरकन्फर्मेशन नहीं मिलनेसे सोसाइटी के कार्यालय पहुँचकर,शर्मा की जातीय मानसिकता से अनभिज्ञ दलित महतो,शर्मासे औरकुछबात करने की कोशिश जारीरखताहै, औरनिष्कर्ष पर पहुंचाते हुए अंतिम बारसविनय निवेधन के साथ संबोधित करते हुए इस प्रकार कहता है, 'सुनिए तो शर्मा जी।'7 लेकिन शर्मा ने महतो की ओर कोई ध्यान ही नहीं देता। यह कितना अमानवीय व्यवहार था।भारत मेंसंघठित शक्ति का अद्भुत समावेश है ।इसकीसुंदर आकांक्षायहथी कि' अनेकता में एकता भारत की विशेषता।'लेकिन एकता की जगह पर अलगाववादीबढ़ने लगे । इसका श्रेय जातिव्यवस्थाको जाता है । इसलिएशर्मा ने मनुष्य के मानवाधिकारों कोचिन्न-भिन्न किया था ।यह भारतीयसामाजिक जीवन को ध्वंस रचना की ओर लेजानेवाले कुछसवर्णों की कुंठित मानसिकता का यथार्थ चिलण है । ये लोग समता, समानता और बंधुता जैसेभारतीयसैंविधानिक लोकतंलव्यवस्थाकेआमुख मूलाधार बिंदुओंकोमिटाते जा रहे हैं।जहाँ'संघम चरणं गच्छामी',एवं'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'आदि परम धर्म माने जाते थेवहाँइनअत्यधिक और सर्वमान्य निर्माणात्मक स्वरूपोंको बहुत बुरी तरह अनदेखा जा रहा है । यह सब अखंड भारत में और विखंडनसिद्धांतका निर्माण करने की ओर संकेत करता है ।बाबासाहेब अम्बेडकर की दीक्षा में शिक्षित होने से प्राप्त जो स्वाभिमान की चेतना है, वह विजय महतो को शर्मा के कार्यालय में बैठें रहनेनहीं दियी । इसलिए महतो ने वहाँ से उठा और सोसाइटी के ऑफिस से बाहर हो गया ।

Scanned with CamScanner

सामजिक संघर्षकी चरम सीमा से अवगत विजय महतो के चहरे पर मायूसी देखकर पत्नी का सारा उत्साह गायब हो जाता है। फिर भी सोसाइटी की सदस्यता की बात पूछने पर महतो का उत्तर यह था कि 'उन्होंने मेंबरशिप देने से मना कर दिया ।'8दलितों का संघर्षपूर्ण जीवन में इस निराशाकी छाया ने और अधिक अंधकार भर देती है । शर्मा के जातिवाद से अनभिज्ञ महतो की पत्नी आश्चर्य चकित होकर इस का कारण पूछती है । क्योंकि उनके मन में निजी मकान बनवाकर उस में शान से रहने की जीवंत आकांक्षा याइच्छा थी । तब महतो यथार्थ घटनाओं का परिचय दर्दनाक आवाज़ से यथाकहते हैं – 'जाति के कारण केवल उच्च जाति के लोगों को ही मेंबर बना रहे हैं वे, दलितों को नहीं बना रहें ।'9यह सुनने के बाद अत्यंत दु:खित होकर महतो की पत्नी संघर्ष में पड़ जाती है । इसलिए वह कहती है 'यह तो बहुत बुरी बात है ।...कोई ऐसी जगह भी बचेगी दुनिया में कि नहीं, जहाँ जात-पात न हो ।'10

वेदना से भरे इन दलित दंपतियों को संघर्षपूर्ण दलित जीवन से अवगत हुआ कि जातिगत भेदभावों सेसुसंपन्न इन हाउसिंग सोसाइटियों में अब तक उन्हें सदस्यता या मेंबरशिप क्यों नहीं मिली ? बाबासाहेब अम्बेडकर के द्वारा प्रस्थापित भारतीय संविधान के प्रति अत्यंत विश्वास प्रकट करनेवाला महतो जी अंतिम कसौटी पर पहुँचते हैं, और कहते हैं '...कोई भी सोसाइटी जाति के आधार पर मेंबरशिप देने से मना नहीं कर सकती । सोसाइटी वालों ने भले ही मेंबरशिप देने से मना कर दिया है, लेकिन मैं मेंबरशिप केलिए एप्लीकेशन जरूर डालूँगा । केवल डाक या कूरियरसे भेजूंगा तो वे एप्लीकेशन नहीं मिलने या देर से पहुँचने का बहाना बनाकर मना कर सकते हैं। इसलिए मैं अपनी एप्लीकेशन डाक से भेजने के साथ-साथ ई-मेल के द्वारा भी भेजूंगा और आज ही भेजूंगा । तब देखता हूँ कैसे रिजेक्ट करते हैं वे मेरी एप्लीकेशन ।'11 कहानी का इस उद्दरण से यह पता चलता है कि हमेंआधुनिककाल में तकनीक की सहायता से अपने दलित संघर्ष को आगे बढ़ायें । 'सूचना का अधिकार अधिनियम' (RTI Act 2005) जैसे समाचार सांकेतिकता का सहयोग भी लेना चाहिए ।बाबासाहेब के विचारों से प्रभावित दलित अधिकारी अपनेसंघर्ष के विविध रूपों को कोजते हुए निरंतरअपने संघर्ष में लगे रहना चाहिए और उसमें कोई रुकावट नहीं आना चाहिए । मैदान छोड़कर युद्द नहीं लड़ना चाहिए । व्यक्ति के प्रति नहीं बल्की

Scanned with CamScanner

व्यवस्था के अंदर रहकर ही उस व्यवस्था के विरुद्धसंघर्ष जारी रख सकते हैं । कहानीकार डॉ. कर्दम जी यहाँ दलित चेतना के अग्रदूत कबीरदास के प्रसिद्ध दोहा –काल करे सो आज कर, आज करे सो अब \ पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब को भी हमें याद दिलाते हैं जैसे महतो के द्वारा अपनी मेंबरशिप की एप्लीकेशन भेजने के सन्दर्भमें ठान लेकरप्रकट करवाते हैं कि - 'आज ही भेजूंगा।'12तुरंत निर्णय औरवह भी सही फैसला करना आधुनिक युग में यह तकनीक की देन है ।

सामजिक संघर्ष में युद्धरत विजय महतो को आधुनिक यातकनीकियों की सहायता से लड़ने केलिएतैयार होते हुए देखकर उनकी पत्नी अपना संदेह इस प्रकार प्रकट करती है कि –'यदी तब भी वे मेंबरशिप नहीं दें तो क्या कर लेंगे?'13 इस पर सुसज्जित सैनिक या अदालत के वाद पक्ष के वकील की तरह महतो कहता है – 'तब?...तबमैं उनके खिलाफ कानूनी कारवाई करूंगा। कोर्ट में जाऊँगा । इस बार चुप नहीं बैठूंगा मैं । देखता हूँ कैसे जाति के आधार पर मेंबरशिप देने से मना करती है हाउसिंग सोसाइटी ।'14 पत्नी से इतना कहकर विजय महतो ने उठकर कंप्यूटर ऑन किया और हाउसिंग सोसाइटी की वेबसाईट खोलकर मेंबरशिप का आवेदनपत्र भरने लगा ।यहाँ पर कहानीकार डॉ. कर्दम जी अदालत और कानूनी कारवाई के प्रति अत्यंत विश्वास प्रकट करता है । यह सब इस देश केहर नागरिक केलिए बाबासाहेब ने संविधान में प्रावधान किये थे ।

इस उद्धरण से यह पता चलता है कि बाबासाहेब के विचारों से शिक्षित बनना अनिवार्य इसलिए बताया गया कि दुर्नीतीपूर्णबनाये गये भारतीय सामजिक सीढ़ियों मेंस्वयं की तलाश करने लगता है । स्वयं को तलाश करना चेतना का संकेत है। इस चेतना से स्वाभिमान बढ़ता है । वैयक्तिक स्वाभिमान बढ़ने से और सामाजिक चेतना पैदा होती है।चेतनाशील बनकर रहने से संघर्षपूर्ण सामाजिकजीवन में लोकतंत्र के सर्वोत्तम संविधान की पद्धति कानूनी कारवाई से अंतिम 'विजय' प्राप्त कर सकता है। कठिन से कठिन दु:खद परिस्थियों में भी अम्बेडकर वाद हमें सही दिशा प्रदान करता है । इस कहानी में डॉ. कर्दमने विजय महतो के माध्यम से शिक्षित दलितों में इस प्रकार की चेतना की आकांक्षा व्यक्त किये थे । यह सही संकेत है ।

Scanned with CamScanner

संदर्भ सूची:

1. से 14तककखरोंच (कहानी-संग्रह), कर्दम जयप्रकाश, स्वराज प्रकाशन-नई दिल्ली-02, दरियागंज प्रथम संस्करण: 2014, ISBN: 978-81-928054-3-6, पृ. सं. 41 से 46.
15. Castes in India: Their Mechanism, Genesis and Development by B. R Ambedkar, Edited by Frances W. Pritchett. Text source: Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speaches, Vol. 1. Bombay: Education Department, Government of Maharashtra, 1979, pp.3-22.
16. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय, भाग-I जातिप्रथा, भारत में जातिप्रथा: संरचना, उत्पत्ति और विवास, इंडियन एन्टीक्वेरी (भारतीय पुरावशेष संकलन), मई 1917, खंड 41,
17. दलित अभिव्यक्ति संवाद और प्रतिवाद (डॉ. जयप्रकाश'कर्दम'), सं. गौतमरूपचंद, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली – 110053, प्रथम संस्करण : 2007, ISBN : 978-81-904244-9-3
18. दलित चेतना – सोच, सं. गुप्ता रमणिका, नवलेखन प्रकाशन, मेन रोड, हजारीबाग-825301, प्रथम संकरण : 1998
19. मनुष्यता के आईने में दलित साहित का समाजशास्त्र, कुमारनिरंजन, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्र.) लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002, प्रथम संस्करण : 2010, आई. एस. बी. एन. 978-81-7975-347-7
20. दलित दृष्टी,ओमवेट गेल, अनुवादक: गुप्तारमणिका एवं कैस अकील, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली – 110 002, प्रथम संकरण : 2011, ISBN:978-93-5000-726-6
21. दलित राजनीति के मुद्दे, भास्कर हुकुम चन्द, स्वराज प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संकरण : 2013, ISBN: 978-93-81582-44-2
22. दलित साहित्य का स्त्रीवादी स्वर, थोरात विमल, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्र.) लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002, प्रथम संस्करण : 2008, आई. एस. बी. एन. 978-81-7975-230-2

असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
खम्मम, तेलंगाना।

Scanned with CamScanner